PUNE RESEARCH TIMES ISSN 2456-0960
AN INTERNATIONAL JOURNAL OF CONTEMPORARY STUDIES VOL 5, ISSUE 3

भारतीय हिंदी फिल्म अनोखे गायक स्वर्गीय कुंदन लाल सहगल

प्रा डॉ सुरेंद्र शेजे,
संगीत विभाग प्रमुख (सहयोगी प्राध्यापक)
जे. डी. पाटील सांगळुदकर महाविद्यालय
दर्यापूर, जिल्हा अमरावती
महाराष्ट्र भारत

सन् 1931 से आज तक हिन्दी चित्र जगत् में अनेक गायक आये, परन्तु जो अमिट छाप स्व० सहगल छोड गए हैं, वह अविस्मरणीय है। स्व० सहगल, न्यू थिएटर्स के श्री वीरेन्द्रनाथ सरकार, द्वारा चित्र जगत में लाये गये।

कुन्दन लाल सहगलजी का जन्म 4 ऐप्रैल 1904 ई. को अमरनाथ सहगल के घर जम्मू में एक प्रतिभाशाली बालक का जन्म हुआ। इनके पिता श्री अमर चन्द सहगल वहां कचिहरी में सेवारत थे। बचपन से ही सहगल की मन पढ़ाई से अधिक संगीत की ओर था। के.एल. सहगल को बचपन से ही गाने का शौक था। कुन्दन गाने बजाने, नाचने वालों, फकीरों, जोगियों, कव्वालों की सभामें अधिक उपस्थित रहते थे। इनके पिता सेवा से मुक्त होकर अपने पिताका के मकान शिवराज गढ़, पंजपीर जालन्धन आ बसे। इनके एक बडे भाई थे जिनका नाम राम लाल था। इन्हे भी गाने का बडा शौक था। उन्होंने संगीताध्यापक से हारमोनियम सीखना आरम्भ किया। सिखते समय वे अन्दर से दरवाजा बंद कर लेते थे। और कुन्दन बाहर सीढ़ीयों के उपर बैठकी सुनते थे। कुन्दन के भाई कुछ विशेष रूप सिख नही पाऐ परन्तु कुन्दन सुन सुन कर ही गायक बन गये। कुन्दन लाल सहगल जी का बचपन ऐश व आराम आराम के न थे। उन्हों ने लौहोर में रमिगंटन टाईप राईटर

कम्पनी में, दिल्ली रेल्वे स्टेशन, पर फिर बरेली आदि शहरो में नौकरी या की।

कुन्दन अपना भाग्य आज़माने कलकत्ता गऐ। वहा रविन्द्र नाथ टैगोर ने इनके गाने सुनकर अपने गीत गाने की आज्ञा प्रदान की। आर.सी. बोराल साहिब ने उन्हें फिल्म में गाने और अभिनय का काम दिया। कुन्दन लाल सहगल का आवाज़ का जादू सिर जढ़ कर बोला। सारे भारत भर में इनके गीतों ने धूम मचा दी। आज भी इनके गीत रेडियों आदी द्वारा प्रसारित किए जाते है। एक पंजाबी के मुंह से बंगाली गीत सुनकर कुन्दन को लोग बंगाली ही समझते और शर्त तक भी लगा बैठते थे।

एक दिन हरिशचन्द्र बाली एक युवक को लकर आ.सी. बोरल के पास पहुंचे और कहा 'पंजाब से कच्चा माल आया है यह केवल ग़ज़ल ही गाता है। इस ने शास्त्रीय संगीत की कोई शिक्षा नही ली है परन्तु आवाज बहुत मीठा है। इसे आप प्रयोग कर सकते है।' इन दिनो कुन्दन सहगल किसी कम्पनी में सेल्ज़ मैनेजर की नौकरी कर रहे थे। बोरल साहब ने काम दिया। इन दिनों सहगल जीने अनेक फिल्मों मे शास्त्रीय शैली के गीत गाए और साथ ही इन्होने अभिनय तक भी कीए।

कुन्दन लाल सहगल जी द्वारा गाया गीत आज भी लोगों को उतने ही प्रिय है।

बालम आए बसो मोरे मन में, झूलना झूलाओ,

होरी ब्रजराज दुलारी, ए दिल बेकरार व यों, जब दिल ही टूट गया,

करूं क्या आस निरास भई, सुनो सुनो ऐ कृष्ण कान्हा, बाग़ लगा दूं सजनी,

बाबूल मोरा नैहर छूटो ही जाए — इस ठुमरी को कोई सुनकर कोई यह नही कह सकता कि सहगल एक कुशल ठुमरी गायक बन सकते है।

कुन्दन लाल सहगल द्वारा गाए हुए 'दु:ख के दिन अब बीतत नहीं' (देवदास), 'एक बंगला बनेगा न्यारा'(पिसीडेण्ट), 'दो नैना मतवाले' (मेरी बहन), 'मधुकर श्याम हमारे चोर' (भक्त सूरदास), 'जब दिल ही टूट गया' (शहाजहाँ), जैसे आदी अनेक गीत कभी नही भूले जा सकते है।

कुन्दन लाल सहगल ने राग देव गंधार, राग बहार, राग बिहाग, भैरवी, यमन देस, राग दरबारी कान्हडा के अतिरिक्त बहुत गीत है जो अनेक मिश्र रागों में गाए है। दिन रात काम करने और काली पांच (व्हस्की) का अधिक प्रयोग क उनके लिए अधिक घातक सिद्ध हुआ। कुन्दन लाल सहगल गीत के रेकॉर्डिंग पूर्व पिते थे। जब सारी तैयारियां हो जातीं तो अपने ड्राइव्हर को काली पाच लाने को करते थे। 'हम जी के क्या करे जब दिल ही टूट गया', फिल्म शहजाह के गीत की रेकॉर्डिंग होने जा रही थी। उनकी काली पांच खत्म होगई थी। परन्तु रेकॉर्डिंग पूरी हो न सकी। क्यों की नशा अधिक हो गया था। दूसरे ही दीन नौशाद ने सलाह दी की एक बार काली पांच की रेकॉर्डिंग की जाए फिर पीकर। फिर सहगील ने कहा 'मंजूर'। दोनो रेकॉर्डिंग में से सहगल को चुनने के लिए कहा गया सहगल को वह पसंद आया जो उन्होंने सुफि अवस्था में गाया था। सहगल ने नौशाद से कहा, 'काश'। हम पहले मिले होते।

के. ऐल. सहगल के गीत आज भी उन्हें अमर बनाए हुवे है। उनके शेकडो ग्रामो फोन रेकॉर्डिंग उपलब्ध है। आकाशवानी द्वारा सुनने को प्राप्त होते रहते है।

के. ऐल. सहगल अधिक मात्रा में शराब पीने लगे थे। 1946 में वे आराम करने अपने गावं जालंधर आए। यहीं 18 जनवरी १९४७ ई. में इनका शरिर शांत हुआ। तब उनकी उम्र 43 साल की थी। सहगल साहब ने मने से पहले कुटंबियों को सूचना दी थी कि स्मशान यात्रा में शाहजहाँ 'जब दिल ही टूट गया' लगाया जाय। पूरी स्मशान यात्रा में ये गीत लगाया गया। उस दिन पूरा जलंधर शहर मानो कि स्तब्ध हो गया था। स्कूल और कॉलेजो में स्वयंभू छुट्टी थी।

मृत्यु के बाद जालंधर शहर में एक मोहललेके नाम 'सहगल मोहल्ला' रखा गया है ओर सहगल स्टेडियम भी हमें दिखाई देता है।

डाक विभाग ने इनकी पुनय: स्मृती 4 एप्रिल 1995 ई. मे पांच रूपऐ का विशेष डाक टिकट भी जारी किया।

संदर्भ

१)भारतीय संगीत का इतिहास— भगवतशरण शर्मा,

२)भारतीय संगीत का इतिहास — डॉ. जोगीन्द्र सिहं बावरा

३) भारतीय संगीत की उत्पति एवं विकास — डॉ. जोगीन्द्र सिहं बावरा

४)किस्से के. एल. सहगल के — योगेश स. यादव,